ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

जयशंकर प्रसाद के कृतित्व में नारी अस्मिता

[1]डॉ0 अवधेश कुमार शुक्ला
[1]सह प्रोफेसर हिन्दी, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिन्दकी, फतेहपुर उ0प्र0

Received: 08 May 2019, Accepted: 11 May 2019 ; Published on line: 15 May 2019

Abstract

जयशंकर प्रसाद को हिंदी के वरिष्ठ लेखक साहित्यकार कहानीकार नाटककार के रूप में ख्याति प्राप्त है यह छायावाद के चार स्तंभ में से एक हैं। इन्होंने हिंदी साहित्य में छायावाद युग की स्थापना की छायावाद के माध्यम से इन्होंने खड़ी बोली के काव्य में माधुर्य रस के साथ साथ जीवन के सूक्ष्म एवं व्यापक आयामों का चित्रण भी बखूबी किया है । हिंदी साहित्य का शायद ही कोई ऐसा पाठक होगा जो जयशंकर प्रसाद को ना जानता हो। हिंदी साहित्य में कविता कहानी तथा नाटकों के माध्यम से नारी के सशक्त रूप के दर्शन कराएं हैं प्रसाद जी के साहित्य में हम आज की नारी को देख सकते हैं प्रसाद जी नारी स्वतंत्रता के बहुत बड़े समर्थक थे उनके साहित्य में स्त्री बंधन से मुक्त है वह परिवर्तन में विश्वास करती हैं और परिवर्तन के लिए विद्रोह तक करने को तैयार रहती है प्रसाद जी के नारी पात्र उन पुरुषों का मुंहतोड़ जवाब देती हैं जो नारी को हीन अबला और अक्षम समझते हैं ।

प्रसाद जी के रचनाओं में नारी के प्रति सम्मान आदर भाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी को पावन माधुर्य एवं स्नेहमयी आदि भावों से जाना जा सकता है। उन्होंने अपनी रचना आंसू के माध्यम से नारी के प्रति अपने उदार दृष्टिकोण को दर्शाया है आंसू के माध्यम से उन्होंने नारी के उस रूप के दर्शन कराने का प्रयास किया है जो पुरुष को उसके अंधकार मय जीवन से बाहर निकालने का प्रयास करती है । उसका सौंदर्यस पावन और आलोक से मंडित है।

''चंचला स्नान कर आवे

चंद्रिका पर्व में जैसे

उस पावन तन की शोभा

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

आलोक मधुर थी ऐसी''

इसी तरह कामायनी महाकाव्य के माध्यम से उन्होंने नारी की श्रेष्ठता सिद्ध करने का प्रयास किया है । इस महाकाव्य में श्रद्धा पात्र के माध्यम से इन्होंने स्त्री के दया, माया, ममता, उदारता, दानशीलता, वात्सल्यता, क्षमा सेवा आदि उदात्त गुणों से युक्त नारी के स्वरूप का निरूपण किया है। श्रद्धा का हृदय विश्व कामना की भावना से ओतप्रोत है देव प्रकृति के विनाश से संतप्त मनु के हृदय में आशा का संचार करते हुए उसे कर्मठ और साहसी बनाती है। उसके हृदय में करुणा का आगाध सागर हिलोरे मारता दिखाई देता है । वह इस विश्व के कल्याण के लिए विश्व की सृष्टि के लिए अपनी दया करुणा माया ममता क्षमा आदि के साथ मनु को अपना समर्पण कर देती है ताकि इस विश्व की सृष्टि हो सके और विश्व का कल्याण हो।

''समर्पण लो सेवा का सार
सजल संसृति का यह पतवार
आज से यह जीवन उत्सर्ग
इसी पदतल में विगतविचार
दया माया ममता लो आज
मधुरिमा लो अगाध विश्वास
हमारा हृदय रत्न निधि स्वच्छ
तुम्हारे लिए खुला है पास''

कामायनी के माध्यम से इन्होंने नारी को श्रद्धा के रूप में स्वीकार किया नारी श्रद्धा है वह श्रद्धा जो पुरुष की प्रेरक शक्ति है और उसके जीवन में समरसता एवं आनंद का संचार करने वाली अश्विनी है प्रसाद की नारी पात्र भारतीय संस्कृति के गुणों से युक्त हैं। श्रद्धा मनु की प्रेरणा है वह मनु के जीवन को उसके चरम लक्ष्य तक पहुंचाती है । मनु जहां दुर्बल है वही श्रद्धा सशक्त और दृढ़ है वह मनुष्य से अलग होकर भी विचलित नहीं होती न हीं अपने साहस और विवेक का परित्याग करती है ।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो

विश्वास रजत नग पद तल में

पीयूष स्रोत सी बहा करो

जीवन के सुंदर समतल में''

इस तरह प्रसाद जी के मन में एक आदर्श भारतीय नारी के विषय में जो उदात्त कल्पनाएं थी उन्हें उन्होंने कामायनी के माध्यम से श्रद्धा के माध्यम से मूर्तिमान करने का प्रयास किया तथा श्रद्धा के माध्यम से नारी के सर्वांगीण रूप को चित्रित किया है।

जयशंकर प्रसाद जिस युग में रचनाएं कर रहे थे उस युग में स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी न थी वह काल सती प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह आदि समस्याओं का दौर हुआ करता था उस युग में प्रसाद जी ने अपनी रचनाओं में उन नारी पात्रों को उठाने का प्रयास किया । जो परिवर्तन लाना चाहती थी जो समाज को बदलना चाहती थी और समाज में नारी के अस्तित्व को स्थापित करना चाहती थी । जयशंकर प्रसाद के नाटकों में जहां नारी पात्र भाव कोमल और उतार कर्तव्य परायण इत्यादि हैं वहीं दूसरी ओर वे अपने आत्मसम्मान के लिए अपने विद्रोही रूप को दिखाने से भी परहेज नहीं करती हैं।

जन्मेजय का नाग यज्ञ की नारी पात्र शर्मा के माध्यम से प्रसाद जी नारी के स्वाभिमानी रूप को दर्शाते हैं । मनसा द्वारा शर्मा का जातिगत अपमान किया जाता है किंतु शर्मा उस अपमान को सह नहीं पाता इसलिए वह नागपुर के अपमान पूर्ण राज सिंहासन को ठुकरा देती है किंतु इसके बावजूद वह नागों का अनिष्ट नहीं करना चाहती है यह शर्मा के स्वाभिमानी स्वभाव के साथ–साथ उसकी उदारता को भी दर्शाता है । इस प्रकार जहां एक ओर प्रसाद के नाटकों की नारी अपने स्वाभिमान की रक्षा करती है वहीं दूसरी ओर अपने उदात्त गुण उदारता का त्याग भी नहीं करती है ।

इसी तरह उनके अन्य नाटक राज्यश्री के स्वभाव में भी क्षमाशील का उदारता एवं कोमलता आदि भाव विद्यमान है वह अपने कुल की मर्यादा का पूरी तरह निर्वाह करती है इसलिए वह देव गुप्त पर तलवार से वार कर देती है उसे राज्य का छीना जाना अपमानजनक लगता है।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

चंद्रगुप्त नाटक के सभी स्त्री पात्रों में देशभक्ति का भाव प्रमुख रूप से देखने को मिलता है । अलका देश भक्ति के भाव के कारण अपने भाई और पिता का परित्याग कर देती है। पर्वत ईश्वर द्वारा विवाह संबंध ठुकरा दिए जाने पर कल्याणी का आत्मसम्मान जागृत हो जाता है कल्याणी युद्ध में पर्वतेश्वर की मदद करके उससे अपने अपमान का बदला लेती है और उसे नीचा दिखाती है। आगे भी अपने आत्म सम्मान की रक्षा के लिए मही पर्वत ईश्वर की हत्या करने से भी नहीं चूकती है । शकटार की पुत्री सुवासिनी का एक ब्राह्मण द्वारा वेश्या इत्यादि कहे जाने पर उसके आत्मसम्मान पर ठेस पहुंचती है जिसके लिए वह अपने प्रेमी से उस अपमान का बदला लेने के लिए कहती है मालविका का उद्यान सेतु का मानचित्र बनाना तथा चंद्रगुप्त की शैया पर सोकर आत्मोत्सर्ग करना भी मालविका की प्रबल राष्ट्रीयता का परिचायक है। इस तरह कल्याणी, कर्नेलिया, सुवासिनी, मालविका, केवल मात्र प्रेमिका ने नहीं बल्कि आत्मसम्मान की ज्योति भी प्रज्वलित होती हुई दिखाई देती है। चंद्रगुप्त नाटक के नारी पात्रों में जहां एक और नारी सुलभ भाव देखने को मिलते हैं वहीं दूसरी और प्रतिकार का भाव भी प्रबल रूप से दिखाई देता है।

ध्रवस्वामिनी नाटक के माध्यम से जयशंकर प्रसाद में पुनर्विवाह जैसे मुद्दे को उठाने का प्रयास किया है इस नाटक में उन्होंने दो प्रकार की स्थिति पात्रों का चित्रण किया है जिसमें एक कोमा है जो अपने पति के अत्याचारों को सहती है किंतु उसे त्यागने की कभी नहीं सोच सकती है वहीं दूसरी ओर ध्रुवस्वामिनी है जो अपने पति के अत्याचारों से क्षुब्ध हो उसका परित्याग कर देती है और चंद्रगुप्त से पुनर्विवाह कर पुरुषों के अत्याचार को चुनौती देकर नारी स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त करती है। उस तत्कालीन समय में जब प्रसाद जी यह नाटक लिख रहे थे तब तलाक जैसे मुद्दे सुनने में भी नहीं आते थे उस समय उन्होंने ध्रुवस्वामिनी के माध्यम से अपने पति से अलग हुए बल्कि चंद्रगुप्त से दोबारा उसका विवाह भी करवा कर इस तरह देखा जाए तो ध्रुवस्वामिनी नाटक आज के युग में प्रासंगिक है।

नाटकों के साथ–साथ उपन्यासों में भी प्रसाद का नारीवादी दृष्टिकोण देखने को मिलता है तितली उपन्यास के माध्यम से प्रसाद जी ने नारी के नारीत्व और आदर्श पत्नी स्वरूप को दिखाने का प्रयास किया है तितली उपन्यास की नायिका की कहानी कृषि और ग्रामीण जीवन के केंद्र में लिखी गई है इसमें वर्णित नारी एक आदर्श प्रेमी का और एक आदर्श पत्नी के रूप में दिखाई देती है । तितली प्रसाद की वह नारी पात्र हैं जिसमें स्वाभिमान का भाव तीव्र दिखाई देता है तितली के

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

पति मधुबन को सजा हो जाने पर और उनके पूर्वजों की शेरकोट बेदखल हो जाने पर तथा बंजरिया पर लगान लग जाने पर भी वह हिम्मत नहीं हारती और किसी से सहायता की भीख नहीं मांगती बल्कि वह स्वयं मेहनत करके लड़कियों की पाठशाला चलाती है। जिससे वह अपना व अपने पुत्र का जीवन यापन करती है और अपने आत्मसम्मान आत्म गौरव की रक्षा करती है तितली उपन्यास के माध्यम से प्रसाद जी नारी शिक्षा को बल देते हैं उनका मानना है कि एक शिक्षित नारी समाज को परिवर्तित करने की क्षमता रखती है ।

जयशंकर प्रसाद अपनी रचनाओं में नारी स्वतंत्रता को विशेष महत्व देते हैं उनकी नारी पात्र के राजनीतिक पक्ष भी हमें देखने को मिलते हैं सामाजिक पक्ष भी हमें देखने को मिल जाते हैं। प्रसाद जी नारी में कोमल स्वभाव की कामना तो करते हैं लेकिन उसके साथ साथ आत्मसम्मान की रक्षा के लिए उनसे हर संभव विद्रोह की कामना करते हैं। प्रसाद जी का मानना है कि स्त्रियों में व प्राकृतिक शक्ति होती है जिससे वे समाज में अपनी बराबर की जगह बना सकती हैं कहीं ना कहीं स्त्रियों की विद्रोहिणी रूप के लिए भी पितृसत्तात्मक समाज को ही जिम्मेदार ठहराया है ।

सन्दर्भ सूची

१ आंसू – जयशंकर प्रसाद

२ कामायनी – जयशंकर प्रसाद

३ कामायनी – जयशंकर प्रसाद